भारत ज्ञान विज्ञान समिति राजस्थान

80/2000, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान– 302020
फोन :– 0141 – 2783338, ई–मेल :– bgvsraj@yahoo.com

साक्षर भारत के लिए साक्षर भारत यात्रा
नेशनल कला जत्था रूट चार्ट
राजस्थान

दिनांक व वार	जिला	ब्लॉक	पंचायत	प्रदर्शन स्थान	प्रदर्शन समय	व्यवस्था	बडे कार्यक्र	सम्पर्क
25.02.2012 शनिवार	एम.पी.	मध्य प्रदेश	एम.पी.	मध्य प्रदेश	एम.पी.			
26.02.2012 रविवार	बांसवाड़ा	छोटी सरवन	छोटी सरवन	छोटी सरवन	दोपाहर	दोपहर भोजन	बडा कार्यक्रम	डॉ. ओ.पी. कुलहरी (कल्प संस्था) 9410468212
	उदयपुर	कोटड़ा	गोगरूठ	देवला	सांय	रात्री भोजन व प्रस्थान आबू रोड के लिए		श्री भंवर सिंह (आस्था संस्था) 9414166348
27.02.2012 सोमवार	सिरोही	आबूरोड़	आबूरोड़	आबूरोड़	दोपहर	रात्री विश्राम व दोपहर भोजन	बडा कार्यक्रम	श्री बाल कृष्ण शर्मा (दूसरा दशक) 9413001485
	सिरोही	रेवधर	रेवधर	रेवधर	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		श्री ब्रजमोहन शर्मा (सारड संस्था) 9414428431
28.02.2012 मंगलवार	जालोर	जंसवन्तपुर	जसवन्तपुर	जसवन्तपुर	दोपहर	दोपहर भोजन		श्री ब्रजमोहन शर्मा (सारड संस्था) 9414428431
	पाली	बाली	शिवाडी	शिवाडी	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		सुश्री विभा उपाध्याय (दूसरा दशक) 9829293300
29.02.2012 बुधवार	जोधपुर	जोधपुर		जोधपुर शहर	दोपहर	दोपहर भोजन	बड़ा कार्यक्रम	श्री रघुवीर सिंह राठोड (जेएसएस) सुश्री रजनी सेवरीया (एसआरसी जोधपुर) 9460353460
	पाली	रायपुर	देवली कलां	देवली कललां	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		श्री सत्तार मोहम्मद बागडी (बीजीवीएस) 9413274143

								9983355331
	होली	अवकाश				रात्र भोजन व विश्राम		
08.03.2012 गुरूवार	होली	अवकाश						
09.03.2012 से 18.03.2012	एम.पी.	मध्यप्रदेश						
	एम.पी.	मध्यप्रदेश						
19.03.2012 शोमवार	धौलपुर	धौलपुर		लुहारी	दोपहर	दोपहर भोजन		श्री गुलाब सिंह (बीजीवीएस) 9414282910
	धौलपुर	राजाखेड़ा	कासिमपुर	सुन्दरपुर	सांय	रात्र भोजन व विश्राम	बडा कार्यक्रम	श्री रामनरेश (बीजीवीएस) 9828242302
20.03.2012	यू.पी.	उत्तर प्रदेश						

दिनांक व वार	जिला	ब्लॉक	पंचायत	प्रदर्शन स्थान	प्रदर्शन समय	व्यवस्था	बड़े कार्यक्र	सम्पर्क
01.03.2012 गुरूवार	अजमेर	मसूदा	मसूदा	मसूदा	दोपहर	दोपहर भोजन	बड़ा कार्यक्रम	सुश्री रजनी सेवरीया (एसआरसी जोधपुर) 9460353460
	अजमेर	सिलोर	सिलोर	सिलोर	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		सुश्री रजनी सेवरीया (एसआरसी जोधपुर) 9460353460 श्री (एसडब्लूआरसी तीलोनीया)
02.03.2012 शुक्रवार	जयपुर			जयपुर शहर	दोपहर	दोपहर भोजन	बड़ा कार्यक्रम	श्री नरेन्द्र सिंह (बीजीवीएस) 9460359460
	जयपुर	चाकसू	चाकसू	चाकसू	सांय	रात्री भोजन व प्रस्थान अलवर के लिए		श्री दयाराम महरिया (डीएलसीओ जयपुर)
03.03.2012 शनिवार	अलवर	लक्षमणगढ	गोविन्दगढ़	गोविन्दगढ़	दोपहर	दोपहर भोजन रात्री भोजन व प्रस्थान निवाई के लिए	बडा कार्यक्रम	श्री अशोक गुगनानी (बीजीवीएस) 9413304872
04.03.2012 रविवार	टोंक	निवाई	निवाई	निवाई	दोपहर	दोपहर भोजन	बडा कार्यक्रम	डॉ. ए.जे. सीरानी (डीएलसीओ टोंक) 9214984819 श्री (एसआरसी जयपुर)
	बूंदी	हिण्डोली	सतूर	सतूर	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		श्री सिराज अली (बीजीवीएस) 9784831102
05.03.2012 शोमवार	बूंदी	तालेड़ा	तालेड़ा	तालेड़ा	दोपहर	दोपहर भोजन		श्री सिराज अली (बीजीवीएस) 9784831102
	बारां	छीपाबडोद		तूमड़ा	सांय	रात्री भोजन व विश्राम		श्री चम्पा लाल राव (बीजीवीएस) 9799960312
06.03.2012 मंगलवार	बारां	बारां		गोपालपुर	दोपहर	दोपहर भोजन		श्री सीताराम सुमन (बीजीवीएस) 9414331328
	बारां	शाहबाद	केलवाड़ा	केलवाड़ा	सांय	रात्री भोजन व विश्राम	~~बड़ा कार्यक्रम~~	श्री हेमन्त भार्गव (बीजीवीएस) 9772176001
07.03.2012	बारां	किशनगंज	भंवरगढ	भंवरगढ	दोपहर	दोपहर भोजन	बड़ा कार्यक्रम	श्री बलराम मेहता (बीजीवीएस)

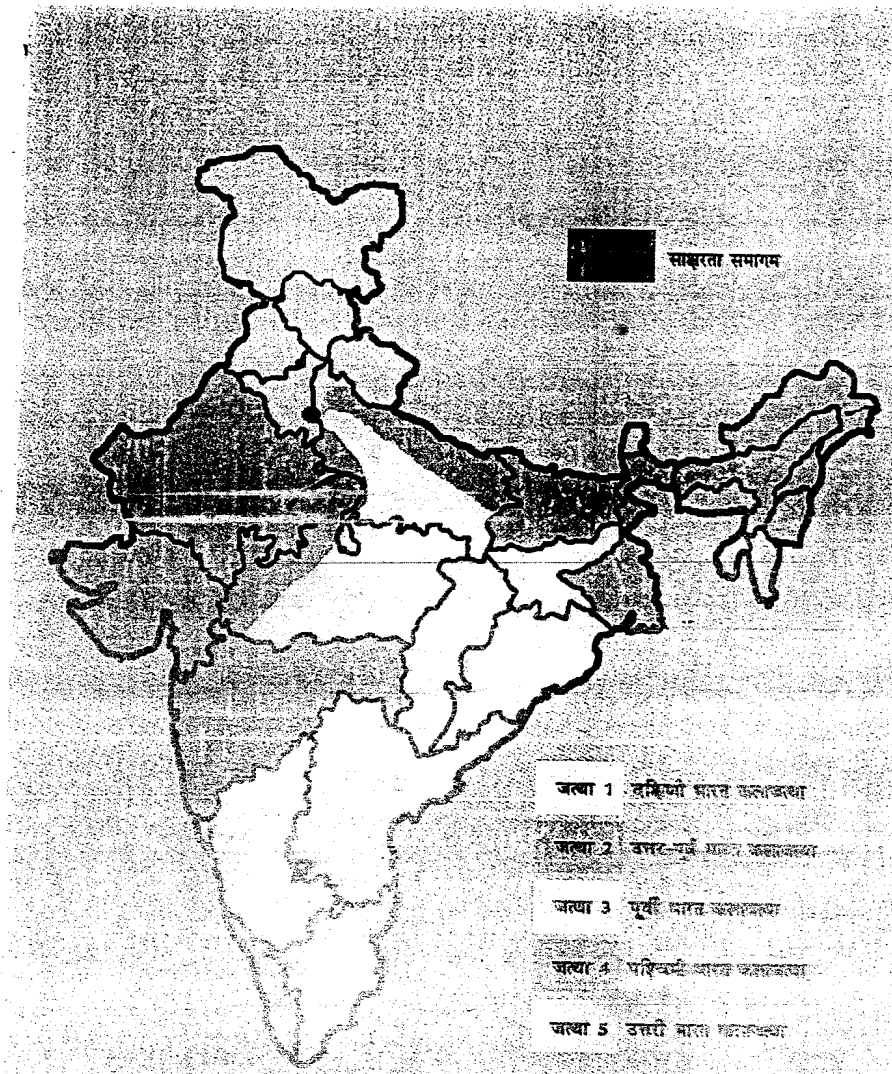

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI
Basement of Y.W.A. Hostel, G Block, Saket, New Delhi - 110 017,
Phone : 011-2656 9943, Phone-Fax : 011-2656 9773
e-mail: bgvsdelhi@gmail.com, website : www.bgvs.org

167

नये भारत के निर्माण के लिए

साक्षर भारत यात्रा

समता, सक्षमता और सजगता के लिए शिक्षा
पढ़िये, कभी भी, कहीं भी!

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नहीं चुनौतियों का समझने, तथा स्वयं अपना जीवन और समुदाय का जीवन बदलने में सक्षम हो पायेंगे।

मोटे तौर पर इसका अर्थ है कि जो भी शिक्षार्थी साक्षरता की कक्षा में जाये वह आगे अपनी पढ़ाई जारी रखने को प्रोत्साहित हो, समुदाय के रूप में भी और एक व्यक्ति के रूप में भी। जीवन पर्यन्त शिक्षा की दुनिया में प्रवेश कराने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिये ताकि वे आलोचनात्मक ढंग से विचार करने और अधिक अर्थपूर्ण गांव, समाज देश और दुनिया के निर्माण में भागीदारी कर सकें। आजकल हमारे विकास सम्बन्धी अभिकथन दस्तावेजों में समावेशी विकास वृद्धि का उल्लेख किया जा रहा है। इसका अर्थ है कि समाज के पिछड़े और हाशियागस्त हिस्सों को मुख्य-धारा में लाया जाये। लेकिन समावेशी विकास तभी संभव होगा जब विकास से वंचित समुदाय को सक्षम और ताकतवर बनाया जाये। समावेश कोई ऐसी चीज नहीं है जो ताकतवर की शर्तों पर किया जाये। समावेश इस प्रकार होना चाहिये जो वंचितों के लिए भी ग्राह्य हो। पढ़ने की संस्कृति का विकास वास्तविक और उपयुक्त समावेश की सर्वाधिक सुरक्षित गारण्टी है।

हाल ही में कई अधिकार आधारित कानूनों को लागू किया गया है। यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारी जिस बहुसंख्यक जनता को इन अधिकारों की पूरी जानकारी होनी चाहिये, वे इससे बहुत दूर हैं। इसका कारण है जागरूकता, सक्षमता और शिक्षा का अभाव। शिक्षा का अधिकार, काम का अधिकार, सूचना का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार, भोजन का अधिकार ये सभी कानून शिक्षा एवं आलोचनात्मक समझ के अभाव में पूरी तरह लागू नहीं किये जा सकते। इन कानूनों द्वारा जो अवसर मिले हैं, उनका पूरा लाभ लेने के लिए जनता को प्रोत्साहित करना इस जत्थे का एक प्रमुख काम है।

इस पृष्ठभूमि में हम इस नये अभियान "साक्षरता और जीवनपर्यन्त शिक्षा द्वारा सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय अभियान" चला रहे हैं।

लोगों को सीखने के लिए नये अवसरों तथा नये कार्यक्रमों की मांग करनी चाहिये। उन्हें ज्यादा से ज्यादा किताबों और पुस्तकों की मांग करनी चाहिये। वे और ज़्यादा सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों और संसाधनों की मांग करें। इसी प्रकार वे ज्ञान व सूचना प्रौद्योगिकी के असमान बंटवारे का विरोध कर सकते हैं। जीवन पर्यन्त शिक्षा का नया प्रतिमान साम्यता, समानता और सहभागी लोकतंत्र पर आधारित होना चाहिए।

अध्ययन अर्थात् पढ़ने का अधिकार एक बुनियादी मानवाधिकार है। हमारा जत्था लोगों को इस अधिकार का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। लोग मांग करें कि उन्हें आगे पढ़ने, जीवन भर पढ़ने के अवसर दिये जायें। उन्हें समझाना होगा कि जिसे पिछड़ापन कहते हैं, वह आलोचनात्मक चिन्तन के साथ-साथ सृजनात्मक और सीखने की संस्कृति का अभाव भी है।

उद्देश्य

1. लोकतंत्र को और अधिक प्रभावी बनाने, विकास प्रक्रिया को समतामूलक बनाने और समुदाय के सशक्तिकरण के लिए साक्षर भारत के विचार और इस विचार की ताकत की ओर पूरे देश का ध्यान आकर्षित कराना।
2. साक्षरता और जीवनपर्यन्त शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को रेखांकित करते हुए जन लामबंदी के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाना।
3. साक्षरता और जीवन पर्यन्त शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर फिर से जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए व्यापक स्तर पर जनजागरण कार्यक्रम चलाना।
4. जनशिक्षण कार्यक्रमों के लिए सामग्री तैयार करना।
5. देश में जीवन पर्यन्त शिक्षा की रीढ़, ग्रामीण क्षेत्रों के ग्रामालय और पुस्तकालय है, अतः इनकी स्थापना के लिए मांग पैदा करना।
6. पंचायती राज के विभिन्न कार्यों के सहज क्रियान्वयन के लिए पंचायती राज संस्थानों को पुनः सक्रिय करना तथा सामाजिक क्षेत्र में काम कर रहे सरकारी विभागों के कन्वर्जेंस को गति देना।
7. साक्षर भारत कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए विभिन्न स्तरों पर सहयोगी स्रोत समूहों के निर्माण में सहयोग करना।
8. साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, जीवन पर्यन्त शिक्षा और विकास के विभिन्न क्षेत्रों के बीच जीवन्त संबंध बनाना।

कार्यक्रम

1. देशव्यापी कलाजत्था

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से फरवरी 2012 में 5 कलाजत्थे रवाना होंगे। ये 22 राज्यों में प्रदर्शन करते हुए, मार्च 2012 में नई दिल्ली में आयोजित साक्षरता समागम में शामिल होंगे।

जत्था 1 – दक्षिणी भारत कलाजत्था

- तमिलनाडु 3 दिन
- कर्नाटक 4 दिन
- आंध्र प्रदेश 6 दिन
- छत्तीसगढ़ 6 दिन
- मध्य प्रदेश 11 दिन
- उत्तर प्रदेश 4 दिन
- दिल्ली 1 दिन

जत्था 2 – उत्तर-पूर्व भारत कलाजत्था

- मणिपुर 2 दिन
- नागालैण्ड 3 दिन
- अरुणाचल प्रदेश 1दिन
- असम 10 दिन
- पश्चिम बंगाल 4 दिन
- बिहार 9 दिन
- उत्तर प्रदेश 5 दिन
- दिल्ली 1 दिन

जत्था 3 - पूर्वी भारत कलाजत्था

- उड़ीसा 6 दिन
- झारखंड 9 दिन
- बिहार 12 दिन
- उत्तर प्रदेश 7 दिन
- दिल्ली 1 दिन

जत्था 4 - पश्चिमी भारत कलाजत्था

- महाराष्ट्र 6 दिन
- गुजरात 5 दिन
- मध्य प्रदेश 7 दिन
- राजस्थान 12 दिन
- उत्तर प्रदेश 4 दिन
- दिल्ली 1 दिन

जत्था 5 - उत्तरी भारत कलाजत्था

- पंजाब 7 दिन
- हिमाचल प्रदेश 2 दिन
- जम्मू-कश्मीर 3 दिन
- हरियाणा 9 दिन
- उत्तर प्रदेश 6 दिन
- उत्तराखण्ड 7 दिन
- दिल्ली 1 दिन

2. जन-किताब

इस के दो भाग होंगे –

1. **हमारा गांव- हमारा [illegible], 8–10 पृष्ठ**
2. **हमारा भारत-हमारा [illegible], 2–4 पृष्ठ**

इस किताब में डिमाई [illegible] के कुल 12 पृष्ठ होंगे । प्रत्येक जत्था केन्द्र से 10–12 गांव (ग्राम पंचायत नहीं) में [illegible] बुलायी जायेगी। जिसमें लोगों से उनके गांव के भविष्य, [illegible] सड़कों, कृषि, [illegible] रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के विषय में बात की जायेगी कि वे [illegible] उपस्थित लोग [illegible] पहुंचेंगे और लिखेंगे कि [illegible] तरह सामूहिक तौर पर [illegible] इसी प्रक्रिया के [illegible] भारत के बारे में [illegible] जिक्र होगा।

साक्षर भारत जत्था [illegible] उसका स्वागत किया जायेगा [illegible] किताबों के [illegible] सकते हैं।

3. जन-दीवार और [illegible]

- यह दीवार गांव / [illegible] किसी [illegible] स्थान पर होगी।
- लोग जो चाहते हैं [illegible] में जन दीवार पर लिखेंगे।
- शिक्षार्थी अपना [illegible] और स्वयंसेवक का नाम लिखेंगे।

- झंडारोहण के दौरान क्षेत्र के सभी नवसाक्षरों को साक्षरता दीवार तथा कैनवास (कपड़े की चादर) पर नाम लिखने के लिए आमंत्रित किया जायेगा। इन कैनवासों को मुख्य जत्था कार्यक्रम के दौरान इकट्ठा करके साक्षर भारत समागम में लगाया जायेगा।

4. ऑडियो-विजुअल वैन यात्रा

- साक्षरता और सतत शिक्षा के विषय पर विशेष रूप से तैयार की गयी फिल्मों को दिखाने के लिए तथा जनवाचन को प्रोत्साहित करने के लिए ऑडियो-विजुअल वाहनों की यात्रा भी आयोजित की जायेगी।

5. मीडिया की लामबंदी

- स्थानीय मीडिया के जो साथी साक्षर भारत को कवर करेंगे उनके साथ कार्यशाला की जायेगी।
- पंचायत, ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर पर साक्षर भारत पर कन्वेंशन किया जायेगा।

6. साक्षरता समागम, मार्च 2012, नई दिल्ली

- पांचों जत्थे दिल्ली के विभिन्न भागों में अपनी प्रस्तुति देंगे।
- मार्च 2012 में नई दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।
- जिसमें आस-पास के राज्यों से भी प्रतिभागिता होगी।
- साक्षर भारत यात्रा के दौरान आम जनता द्वारा तैयार "जन किताबों" से लिए गए विभिन्न खंडों से एक राष्ट्रीय जन किताब तैयार की जायेगी। जिसे मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा [illegible] को भेंट किया जायेगा।

[illegible]

[illegible] यात्रा – विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों को [illegible] जोड़ते हुए [illegible] के व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करेगी।

जिसमें शामिल हैं [illegible] 22 राज्य, 180 जिले, 1000 [illegible]

[illegible] पहुंचेगी।

साक्षरता और शिक्षा की स्थिति

आज 21वीं सदी में भी हमारे देश में साक्षरता का महत्व बना हुआ है। देश का एक बड़ा हिस्सा असाक्षरता के अंधकार में डूबा हुआ है।

आजादी के बाद भी हमारे देश के कुछ हिस्से और समुदाय तरक्की की दौड़ में पिछड़ते चले गये और विकास के साथ समाज दो धाराओं में बंटने लगा। अमीर और अमीर तो गरीब और ज्यादा गरीब होने लगे। निजी स्कूलों के अस्तित्व में आने के साथ शिक्षा बाजार की वस्तु बन गयी, जिसके पास जितना पैसा है वह उसी के अनुसार शिक्षा खरीद सकता है। पिछले बीस वर्षों में वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीतियों के तहत निजीकरण ने समाज में गरीब, वंचित और सामाजिक रूप से पिछड़े हिस्सों को शिक्षा पाने के अवसरों से और ज्यादा वंचित कर दिया है। वंचित, पिछड़े और हाशिये पर सिमटे समुदायों में भी विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से महिलायें शिक्षा पाने के मौकों से और भी ज्यादा वंचित रही हैं।

असाक्षरता और पिछड़ापन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। असाक्षरता के कारण हम न केवल देश-दुनिया की हलचलों से दूर होते हैं बल्कि अपनी जिन्दगी के हालात को समझने, बदलने और सामाजिक विकास की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने में भी सक्षम नहीं हो पाते। तेजी से बदलते इस सामाजिक परिदृष्य में उत्पीड़न को किस्मत का खेल, हर जुल्म को भाग्य का लिखा और हर अन्याय के सामने चुप रहने को संस्कृति समझते लगते हैं। वे अपनी अलग दुनिया बना कर खुश रहने के तरीके ढूंढने लगते हैं। सामूहिकता का स्थान व्यक्तिगत साहस लेने लगता है और आशा का स्थान ऐसी निराशा लेती है कि कुछ भी बदल नहीं सकता। यही निराशा और उदासीनता उन्हें जो भी थोड़ी शिक्षा पाने का अवसर मिलता है, उसमें भी अरुचि पैदा करती है। समाज का बड़ा हिस्सा असाक्षरता की जकड़ में होने के कारण लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी नहीं कर पाता। यही हिस्सा तर्क, विवेक और समझ के आधार पर निर्णय न ले पाने के कारण जटिल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में हाशिये पर रह जाता है। जब समाज का बहुसंख्यक भाग इस स्थिति में होता है, तो वह पूरा क्षेत्र ही न सिर्फ विकास में, बल्कि सामाजिक रूप से भी पिछड़ जाता है। चन्द लोगों द्वारा उच्च शिक्षा ग्रहण कर लेने से भी हमारा स्थानीय परिवेश, हमारा समाज नहीं बदल सकता। जब पूरा समाज शिक्षित होगा, पढ़ने लिखने की संस्कृति का विकास होगा तभी समाज में बदलाव होगा। जो हमारे रहन-सहन, काम-काज, शिक्षा के लिए मिल रहे अवसरों, स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाओं, हमारे गाव और मुहल्लों की नियोजित योजना और सीखने-सिखाने के आशाजनक व उत्साहपूर्ण वातावरण के रूप में दिखायी देगा। अतः पढ़ने-लिखने की संस्कृति का विकास और शिक्षित समाज सिर्फ असाक्षरता दूर करने के लिए नहीं बल्कि शिक्षित और उच्चशिक्षितों के लिए भी उतना ही आवश्यक है, जितना असाक्षरों के लिए विकसित समुदाय और समाज सामूहिक प्रक्रिया का हिस्सा है। इसलिए सामूहिक पहलकदमी से ही हम समाज को आगे बढ़ा सकते हैं।

साक्षरता का उद्देश्य मात्र लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं, बल्कि उन्हें समाज के व्यापक हिस्सों और प्रक्रियाओं के साथ जोडना भी है। साक्षरता शिक्षार्थी के जीवन में नवीन विचारों, सामूहिकता, आशावाद, उत्साह और उमंग का ऐसा झोंका लाती है जो अंधविश्वास, रूढ़िवाद, भाग्यवाद, एकांकीपन, जड़ता, निश्क्रियता जैसे बंधनों को एक झटके में शिथिल कर देता हैं।

इस विशाल संसार और ज्ञान के अनन्त विस्तार तक पहुंचने की पहली सीढ़ी साक्षरता ही है। आज तक मानवजाति ने जितने भी ज्ञान का सृजन किया, सभ्यता और संस्कृति ने जो मंजिले तय की, संगीत, कला, साहित्य और विज्ञान में जो उपलब्धियां हासिल की, साक्षरता व्यक्ति को इन सबसे जुड़कर इन्हे समृद्ध करने का अवसर देती है। मानवजाति की सामूहिकता और संघर्ष की जो समृद्ध विरासत है उसे आगे बढ़ाने का अवसर देती है।

लिखित संसार और ज्ञान का विस्तार न सिर्फ ज्ञान और जानकारी बढ़ाने के लिए बल्कि इस जीवन, समाज और पृथ्वी को और अधिक सुन्दर बनाने के लिए भी प्रेरित करेगा। उत्पीड़न, शोषण को समाप्त करने, उपभोक्तावाद, अमानवीयता, असमानता की सीमाओ को कम करते हुए साक्षर, स्वस्थ, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को प्रेरित करेगा। इस तरह साक्षरता, विकास और ज्ञान पाने के अवसरों की असमानता को भी पाटने का प्रयास करेगी।

साक्षर भारत यात्रा क्यों?

जब से हमारा संगठन बना है, सम्पूर्ण साक्षर भारत का निर्माण हमारा बहुत महत्वाकांक्षी स्वप्न रहा है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि साक्षर भारत की बुनियाद पर ही सक्षम और सुन्दर भारत का निर्माण हो सकता है। इसी सपने को लेकर लाखों स्वयंसेवक और कार्यकर्ता पूर्ण समर्पण और उत्साह के साथ साक्षरता अभियान में जुड़े। सुदूर गावों में करोड़ों शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों पर आने लगे। यद्यपि पिछले दो दशकों में करोड़ो लोगों को साक्षर किया गया, लेकिन इनसे भी बड़ी संख्या में लोग आज भी असाक्षर है। सबसे ज्यादा दुखद तो यह है कि जो लोग पिछले अभियानों के तहत साक्षर हो गये थे, वे एक बार फिर से असाक्षर होने की ओर बढ़ रहे हैं।

साक्षरता तभी क्रियात्मक, उपयोगी तथा सशक्तिकरण का माध्यम हो सकती है, जब यह प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय को अपनी शिक्षा आगे जारी रखने में सक्षम बनाये तथा जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिए स्थायी और आलोचनात्मक संस्कृति की बुनियाद डाले। निष्क्रिय और कमजोर साक्षरता कभी भी सशक्तिकरण का माध्यम नहीं हो सकती। समय गुजरने के साथ यह धूमिल पड़ती जाती है। जो व्यक्ति और समुदाय पढ़ने की संस्कृति को आत्मसात कर लेंगे